बीए0 एल0एल0बी0 द्वितीय समेस्टर

बलबल (1265–1287ई0)

- बलबल का वास्तविक नाम बहाउद्दीन था।
- वह इल्वारी तुर्क था।
- उसका पिता 10,000 परिवारो का खान था।
- किशोवस्था में बलबल को मंगोल्य पकड़ ले गये और गजनी ले जाकर के उन्होने उसे बसर के एक **ख्वाजा जमालउद्दीन** नामक व्यक्ति के हाथो बेच दिया।
- ख्वाजा ने दिल्ली लाकर उसे इल्तुतमिश के हाथों बेच दिया चॅकी बलबन में एक योग्य, बुद्विमान और होनहार लक्षण थे अतः इल्तुतमिश ने उसे '' चालीस'' गुलामो के प्रसिद्व दल का सदस्य बना दिया गया।
- अपनी बद्वि, योग्यता तथा स्वामिभक्ति के कारण उसे रजिया के शासनकाल में **अमीरे–शिकार** के पद पर नियुक्त किया गया।
- बहराम के शासन काल में पंजाब के गुडगॉव जिले में रेवाड़ी की जागीर दे दी और हॉसी का जिला भी उसमें सम्मिलित कर दिया गया।
- नासिरूद्वीन के शासन काल में वह **नाइब–ए मुमालिकात** नियुक्त किया गया।

राज्यारोहणः–

इब्नबतूता, इनामी आदि इतिहासकारों का मत है कि बलबन न नसिरूद्वीन महमूद को विष देकर मार डाला था। किन्तु आधुनिक अनुसंधानों ने इस कहानी को निराधार सिद्व कर दिया है। यद्यपि राज्य की वास्तविक प्रभुत्व शक्ति बलबन के हाथों में थी और नासिरूद्वीन के कोई पुत्र नहीं था। किन्तु वृद्वावस्था और सिंहहासन पर बैठने की महत्वाकांक्षा के कारण, जैसा की उसके पुत्र बुगरा खॉ ने संकेत दिया है, उसने

नवयुवक सुल्तान को विष देकर मार डाला। वास्तविकता जो भी रही हो, 1265 ई0 में नासिरूद्वीन महमूद की मृत्यु के बाद बलबन गद्दी पर बैठा।

बलबल का राजत्व संबन्धी सिद्वान्तः–

बलबन ने अपने दीर्धकालीन अनुभव ने उसे सिखा दिया था कि तुर्की अमीरों की शक्ति का नाश किये बिना सुल्तान न तो राजशक्ति का ही उपयोग कर सकता है, न अपनी प्रजा का सम्मान–पात्र ही बन सकता है। वह स्वयं अपनी आखों से देख चुका था कि तुर्की सैनीक अमीरों के कारण सुल्तान की स्थिति गिरकर एक साधारण सामान्त की सी रह गयी थी। इतिहासकार बरनी लिखता ह कि नासिरूद्वीन के अन्तिम दिनों में सुल्तान की प्रतिष्ठा पूर्णता नष्ट हो चूकी थी। प्रजा के ह्रदय में न उसका भय था न उसके प्रति श्रद्वा। ''सरकार का भय जो सुशासन का आधार और राज्य के पश'' तथा वैभव का स्त्रोत है , लोगो के ह्रदय से जाता रहा था और देश दुर्दशा का शिकार था। बलबन ने इस दुर्दशा का अन्त तथा ताज की शक्ति और प्रतिष्ठा की वृद्वि करने का संकल्प किया जिससे प्रजा के ह्रदय में आतंक कायम हो सके राजत्व क सम्बन्ध में बलबन का सिद्वान्त राजाओं के दैवी अधिकार के सिद्वान्त के सदृश्य था। अपने पुत्र बुगराखॉ के समझ उसके इन शब्दों में अपने सिद्वान्त की व्याख्या की, '' राजा का ह्रदय इश्वरीय कृपा का विशेष भण्डार होता है और इस दृष्टि से कोई भी मनुष्य उसकी समानता नही कर सकता। एक दूसरे अवसर पर अपने राज्य के व्यस्त्वि की पवित्रता पर जोर दिया उसका विश्वास था कि राज्यशक्ति स्वभाव से ही निरंकुश है। उसका यह भी विश्वास था कि प्रजा के अज्ञापालन करवाने तथा राज्य को सुरक्षित रखने के लिए आवश्यक है कि सुल्तान पूर्ण रूप रेखा निरंकुश हो। निरंकुश शासक के रूप में सफलता प्राप्त करने के लिए उसने अनी निजी प्रतिष्ठा में वृद्वि करने का विशेष प्रयत्न किया। राजा की प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए उसने निम्नलिखित कार्य किये–

- अपने को **पौराणिक तुर्की वीर तूरान के अफासीयाव का वंशज** वताया
- जानबूझकर एकान्त निवास करने लगा और एक विशेष प्रकार की गंम्भीरता उसने धारण कर ली
- मद्यपान तथा अमोद–प्रमोद का त्याग कर दिया

- सामान्य लोगो से वार्तालाप करना भी उसने बन्द कर दिया
- अपने दरबार की रस्मों को उसने ईरानी आदर्श पर ढालने का प्रयत्न किया
- उसने लम्बे तथा भयानक लोगो को अपना अंगरक्षक नियुक्त किया जो सदैव नंगी तथा चमचमाती हुई तलवारे लिये उसके पास खड़े रहते थे।
- सुल्तान का अभिवादन करने के लिए उसने **सिजदा और पैवोस** का नियम जारी किये।
- दरवारी वैभव की तड़क–भड़क बढ़ाने के लिए उसने प्रतिवर्ष ईरानी त्योहार नौरोज का मनाना आरम्भ किया।
- अपने लिए विशेष प्रकार की पोशाक तैयार करवाई।
- दरवारियों तथा सरकारी पदाधिकारियों को मुस्कराने, मद्यपान करने का पूर्व प्रतिबन्ध था।
- वह नीची जातियों के लोगो से घृणा करता था।

इन सब बातों की वह कठोरता से स्वयं भी पालन करता था। अपने जेष्ठ पुत्र युवराज मुण की मृत्यु का समाचार सुनकर भी वह विचलित नहीं हुआ और शासन सबन्धी दैनिक कार्य पूर्ववत् करता रहा। इस प्रकार कठोर नियमों तथा रस्मों द्वारा बलबन ने सिंहासन की प्रतिष्ठा की पुनः स्थापना की।

चालीस के मण्डल की समाप्तिः–

बलबन के अनुभव किया कि सुल्तान की निरंकुशता के मार्ग में सबसे बडी बाधा तुर्की अमीर थे। जिसका नेतृत्व चालीस के मण्डल के हाथों मे था। इस मण्डल की स्थापना इल्तुतमिश ने की थी। इल्तुतमिश ने इस दल की स्थापना अपनी प्रतिष्ठा कायम रखने तथा 'चालीस' पर नियन्त्रण रखने में सफल रहा। परन्तु इल्तुतमिश की मृत्यु के पश्चात सुल्तानो तथा 'चालीस' के बीच तीव्र संघर्ष चला, जिसमे 'चालीस' विजय हुई और उसके सदस्यों ने इल्तुतमिश के उत्तराधिकारियों को अपनी इच्छानुसार नचाया। इस मण्डल को नष्ट करने का संकल्प लिया।

- सर्व प्रथम उसने निम्नकोटि के तुर्को की महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त किया और इस प्रकार उन्हे ' चालीस' के समकक्ष कर लिया।
- द्वितीय बलबन ने 'चालीस' के सदस्यों का दमन करने के लिए तथा प्रजा की दृष्टि मे उसके महत्व को कम करने के लिए साधारण अपराधों के लिए उन्हें कठोर दंड दिये जैसे–

उदाहरणार्थः– बदायू के गवर्नर मलिक नकबक ने जो एक प्रमुख अमीर तथा 'चालीस' का एक सदस्य था अपने एक नौकर को इतना पिटवाया की उसकी मृत्यु हो गई। जब उसके विरूद्व बलबन से शिकायत की गई तो सुल्तान ने आज्ञा दी कि उसे जनता के सामने कोडो से पिटा जाय। एक अन्य अमीर हैबातखॉ ने जो अवध का शासक था, शराब के नसे में एक आदमी का वध कर दिया। बलबन ने आज्ञा दी कि हैबातखॉ का 500 कोडे लगाये जाये तदुपरान्त उसे मृत्यु पुरूष कि विधवा के सुपुर्द कर दिया जाय। हैबातखॉ ने 20,000 टका देकर किसी प्रकार मुक्ति प्राप्त कर ली किन्तु इतना लज्जित हुआ कि मृत्युपर्यन्त अपने घर से बाहर नहीं निकला। अवध के शासक अमीनखॉ को जो बंगाल के शासक तुगरिल बेग द्वारा पराजित होकर भाग गया था, बलबन ने अयोध्या के फाटक पर लटकवा दिया।

बलबन ने अपने चचेरे भाई शेरखॉ को 'चालीस' का योग्य तथा प्रमुख सदस्य था और भटिण्डा, भटनेर, समाना तथा सुनय का सुबेदार था, विष देकर मार डाला। उसकी मृत्यु के बाद कोई ऐसा विरोधी नही रह गया जो बलबन की पूर्ण निरंकुशता के मार्ग में कॉटा सिद्व हो सका। इस प्रकार सुल्तान ने कपटपूर्व तथा बर्बर तरीको से 'चालीस के मंण्डल का नाश कर दिया।

गुप्तचर विभाग का संगठन–

बलबल की शासन व्यवस्था सुचारू रूप से चल सकी इसका मुख्य श्रेय उसके गुप्तचर विभाग को था, जिसके संगठन में उसने अपना अधिक समय तथा धन व्यय किया। उसके प्रत्येक सरकारी विभाग, प्रत्येक प्रान्त और यहां तक कि प्रत्येक जिले में गुप्त संवाददाता नियुक्त कर दिये। संवाददाताओं के चरित्र तथा राजभक्ति की वह वड़ी सावधानी के छानबीन करता था। उसने उन्हें अच्छे वेतन दिये और

गवर्नरों तथा सेनानायकों की अधीनता से उन्हें मुक्त रखा। उन्हें प्रतिदिन सुल्तान के पास महत्वपूर्ण घटनाओं का समाचार भेजना पड़ता था। यदि कोई संवाददाता अपने कर्तव्य का उचित रूप से पालन न करता था तो उसे ऐसा दण्ड दिया जाता था जो दूसरों के लिए उदाहरण का काम करें। बदायू के संवाददाता को जिसने मलिक बकबक के सम्बन्ध में सुल्तान को उचित समाचार नही भेजा था, नगर के फाटक पर लटका दिया गया था। इस प्रकार सुसंगठित गुप्तचर व्यवस्था बलबन के निरंकुश शासन का मुख्य आधार बन गयी।

सेना का पुनः संगठनः–

बलबन से पूर्व के शासकों ने तुर्की सिपाहियों के सैनिक सेवा के बदले में नगद वेतन नही, बल्कि भूमि–कर का कुछ भाग दिया जाता था। उनमें से कुछ को वे प्रवेश जागीर रूप में दे दिया जाता था। जिन्हे जीतकर दिल्ली सल्तनत में नही मिलाया जाता था। जिससे वे स्वयं उन्हें जीतने का प्रयत्न करें। इन सैनिकों के उत्तराधिकारी जागीरो का उपयोग करते थे, यदपि उनमे से अनेक ऐसे थे जो सैनिक कर्तव्य का पालन नही करते थे। और समझते थे की हमारी भूमि पर जन्मसिद्ध अधिकार है। बलबल ने इस प्रकार से जागिरदारों की जॉच करवाई। सुल्तान ने आज्ञा निकाली कि वृद्धों, अनाथो और विधवाओं से भूमि वापस ले ली जाय और उन्हे नगद पेंशन दी जायॅ। जो लोग जवान थे सैनिक योग्य उन्हें जागीर उनके अधिकार में रहने दी परन्तु उनके गॉवों में कर वसूलने का कार्य केन्द्रीय सरकार ने अपने उपर ले लिया और जागीरदारों को नकद रूपया देने का नियम बनाया।

बलबन ने इमाद–उल–मुल्क को जो अत्यन्त योग्य तथा सजग अफसर था, सेना मंत्री (दीवाने–ए–आरिफ) के पद पर नियुक्त किया और सेना का सम्पूर्ण प्रबन्ध उसी को सौप दिया। उसको वित्त मंत्री के नियन्त्रण से भी मुक्त कर दिया गया। इमाद ने सैनिको की भरती वेतन तथा साजसज्जा के सम्बन्ध में विशेष रूचि से काम किया। उसने सैनिक अनुशासन स्थापित किया और अपनी वुद्धिमन्तापूर्ण तथा इमानदारी की निति द्वारा सेना के अत्यन्त बलशाली बना दिया। सल्तनत की शक्ति वास्तव में उसी पर निर्भर थी।

विद्रोह का दमनः–

बलवन के समझ वही समस्या थी जो उसके पूर्ववर्ती शासको के समक्ष, मुण्गोरी ने जो प्रवेश जीते थे उसमें से अधिकांश भागों पर हिन्दुओं ने पुनः अधिकार कर लिया। जब बलवन गद्दी पर बैठा तो उसके सम्मुख भी वही पुराना प्रश्न उपस्थित हुआ कि हिन्दु राजाओं ने नये प्रदेशों को जीतकर दिल्ली सल्तनत म मिलाया जाय। अथवा नही, उसने विचार किया कि यदि उसने विजय प्रारम्भ की तो भयंकर संकट उपस्थित होने की आशंका है मंगोलो के लिए दिल्ली पर आर्कमण का मार्ग खुल जायेगा और आन्तरिक अव्यवस्था की शक्तियॉ उठ खड़ी होगी। इस लिए उसने नवीन देशों को न जीतने का निर्णय किया। उसने पुरानों को ही पुर्नविजय तथा उसको संगठित करना ही उचित समझा।

हिन्दुस्तान के अधिकांश भागों में हमारे देशवासियों ने तुर्की सत्ता पर अधिकार कर लिया और तुर्की सरदारों तथा शासकों से यहॉ से खदेड़ दिया। उन्होने तुर्की प्रदेशों को लूटन तथा नष्ट–भ्रष्ट करना आरम्भ कर दिया। जिससे न खेती हो और न ही तुर्की सरदार वहॉ लगान वसूल कर सके। राजपूतों की लूटमार के कारण यातायात के मार्ग सुरक्षित नहीं रहें थें। बदायूँ, अमरोहा, पटियाली तथा कम्पिल में विद्रोही राजपूतों के गढ़ थे, जहॉ से निकलकर वे तुर्की पर अत्याचार करते, किसानो की कृषि करने से रोकते यात्रियों को लूटते तथा फिर अपने स्थानों को लौट जाते, दिल्ली के निकटवर्ती प्रदेश में डाकुओं की भरमार थी। वे दिल्ली की जनता को लगभग प्रतिदिन लूटते थे। उनके भय के कारण मध्याह की नमाज के उपरान्त नगर के फाटक बन्द कर दिये जाते।

फिर बलबन ने विद्रोहो के दमन का संकल्प नही त्याग तथा दिल्ली के निकटवर्ती प्रदेशों के सुरक्षित बना दिया। उसने डाकुओं को कठोर दण्ड दिये, बनों को साफ करवा तथा दिल्ली के समीप ग्रामीण क्षेत्रों में चार दुर्गो का निर्माण करवाया तथा उसमें अफगान सैनिक न्युक्त किये। हिन्दु डाकुओं तथा समान्तों के गिरोह के विरूद्ध निर्भय संर्घष चलाने के लिए कर्मठ तथा योग्य पदाधिकारी नियुक्त किये। भोजपूर, पटियाली, कम्पिल तथा जलाली में उसने सैनिक चौकियॉ स्थापित की उनमे अर्द्ध–बर्बर अफगान सैनिक रखे तत्पश्चात बलबन ने कतेहर की ओर कूच किया। वहॉ उसने सैनिकों को गॉवों

पर आक्रमण करने, मकानो को जलाने तथा सम्पूर्ण पुरूष–जनता को कत्ल करने की आज्ञा दी। निर्दोष स्त्रियों तथा बच्चों को तुर्क दास बना कर ले गये। इन वर्बर तरीकों से सुल्तान ने लोगो के मन भय उत्पन्न की इस प्रकार समस्त प्रदेश उजड़ गये। प्रत्येक जंगल तथा गॉव में मनुष्यो की लाशों को सड़ता हुआ छोड़ दिया गया। थोडे बहुत लोग जो कही छिपे भी रहे तो भय के कारण पूर्णतया दब गये।

राजपूतान तथा बुन्देलखण्ड में भी विद्रोहों का दमन करने के लिए सवॉए भेजी गयी किन्तु उन प्रदेशों मे उन्हें केवल आंशिक सफलता की प्राप्त हो सकी।

बंगाल का पुनविजयः–

बंगाल ने पूर्व सुल्तानो की भॉती बलबन को भी कष्ट दिया। उत्तर पश्चिमी सीमाओं पर मंगोलो के सम्भावित आक्रमण तथा सुल्तान की वृद्वावस्था से प्रोत्साहित होकर बंगाल के सूबेदार ने स्वंम को स्वतन्त्र घोषित कर दिया तथा सुल्तान की उपाधि धारण की, अपने नाम के सिक्के जारी किये तथा खुतबा पढ़वाया। विद्रोहो का दमन करने के लिए बलबन ने

सर्वप्रथम– अवध के शासक अमीन खॉ को भेजा किन्तु अमीन खॉ पराजित हुई। इस पर बलबन को इतना क्रोध आया कि उसको अवध के फाटक पर लटकवा दिया।

दूसरी सेना– तिर्मिति के नेतृत्व में सेना भेजी परन्तु वह भी पराजित हो गया और उसको भी वही दण्ड मिला जो अमीन खॉ को दिया गया था।

तीसरी सेना– भी पराजित होकर लौट आयी।

बलबन ने स्वयं बंगाल के लिए कूच किया। दो लाख फौज तथा अपने द्वितीय पुत्र बुगरखॉ को साथ वह लखनौती के निकट जा पहुॅचा। तुगरिल खॉ अपनी राजधानी छोड़कर पूरबी बंगाल की ओर भागा परन्तु व सुनारगॉव के समीप पकड़ा गया और पूरवी वंगाल के हाजीनगर में उसका वध कर दिया गया। सुल्तान लखनौती पहुचा और वहॉ जुगरिल के अनुनायियों को दण्ड दिये।

इतिहासकार वरनी लिखता है कि '' मुख्य बाजार के दोनो ओर एक–दो मील लम्बी सड़क पर एक खूँटों की पॉति गाड़ी गयी और उन पर तुगरिल के साथियो के शरीर को ठोंका गया। देखने वालों ने ऐसा भयंकर दृश्य कभी नही देखा था और बहुत से लोग तो आतंक तथा घृण्ना से मूर्च्छित हो गये।''

मंगोल आक्रमण–

उत्तर पश्चिम पर मंगोलो के आक्रमण का सदैव भय बना रहता था और इसलिए बलबन विजय हेतू दुर्ग–श्रंखला का निर्माण कराया और उसकी रक्षा हेतु अपने चचेरे भाई शेरखॉ के सुपुर्द किया, वह वीर पराक्रमी तथा निर्भीक योद्धा था। उसके आतंक से खोवखर जैसी जातियॉ भी डरती थी। 11270 में उसकी मृत्यु हो गयी। अव बलबन ने सम्पूर्ण सिमान्त प्रवेश को दो भागो में विभक्त किया। सुनम तथा सनाया को उसने अपने छोटे पुत्र बुगरखॉ को तथा मुल्तान, सिन्ध और लाहौर को जेष्ठ पुत्र मुहम्मदखॉ को सौप दिया। मुहम्मद ने मंगोलो की प्रगति को रोकने के लिए ठोस कार्य किये, फिर भी उन्होने उत्तरी पंजाब को लूटा और सतलज को पार कर लिया। मुहम्मद तथा बुगराखॉ की संयुक्त सेना ने उन्हें पराजित कर दिया। परन्तु 1286 ई0 में मंगोल पुनः भारत में आ धमके और इस बार उन्होने मोहम्मद को मार डाला। उस समय बलबन की अवस्था 80 वर्ष हो चूकी थी। परन्तु फिर भी उसने उत्तरी पश्चिमी सोमाओं की सुरक्षा हेतु कार्य की ओर ध्यान देता रहा। उसने त्यौहार पर पनः अधिकार कर लिया किन्तु मंगोलो के विरूद्ध उसे इससे अधिक सफलता नहीं मिली और दिल्ली की सत्ता लाहौर के उस पार न बढ़ सकी। रावी के पश्चिमी का प्रदेश को भी मंगोलो के अधिकार में बना रहा।

बलबन की मृत्यु–

अपने प्रिय पुत्र मोहम्मद के सदमें को न बर्दाश्त कर पाने के कारण 80 वर्ष की अवस्था में 1286 में बलबन की मृत्यु हो गयी। मृत्यु के पूर्व बलबन ने अपने पौत्र के खुसरो को अपना उत्तराधिकारी बनाया। बलबन शरीयत का कट्टर समर्थक था और वह दिन में 5 बार नमाज पढ़ता था। सुल्तान बनने के बाद उसने शराब तथा भोग विलास का पूर्णतः त्याग दिया। इसने अपने राजदरबार में अनेक

कलाकारों एवं साहित्यकारो को संरक्षण प्रदान किये। इसके राज्यश्रय में फारसी के प्रसिद्ध कबि अमीर खुसरो एवं अमीर हसन करते थे। इसके अतिरिक्त ज्योतिषो एवं चिकित्सक,मौलाना हमीदुदीन मुतरित, प्रसिद्ध मौलाना बदरूदीन एवं मौलाना हिसानुदीन इसके दरवार में रहते थे।

बलबन का मूल्यांकनः—

लगभग 40 वर्ष तक बलबन ने दिल्ली सल्तनत की बागडोर अपने हाथों में संभाली । पहले सुल्तान के नाईब के रूप में उसेके पश्चात सुल्तान के रूप में, इस सम्पूर्ण समय में उसका एक ही मुख्य उददेंश्य था । हिन्दुस्तान मे नव स्थापित तुर्की सल्तनत से सुसंगठित करना था। और निहः संदेह उसे इस कार्य में उसे सफलता प्राप्त हुई, उसने आन्तरिक शक्ति की स्थापना, उत्तरी पश्चिमी सीमाओं की रक्षा तथा मंगोलो के आक्रमण से बचाया निःसन्देह वह एक योग्य एवं कठोर शासक था।

उसने निर्दयता तथा सर्वत्र आतंक स्थापित करके अपने उदेश्य को प्राप्त किया। अपने शत्रुओं को उसने जो दण्ड दिये वह निर्दयतापूर्ण तथा वर्बर थे किन्तु इसके पीछे उसका गन्तव्य अपने हार्दिक उदेश्यों की पूर्ति करना था वह पक्का सुन्नी मुसलमान था।

बलबन ने तुर्की सल्तनत की रक्षा का सुप्रन्बध किया और उसे नया जीवन प्रदान किया।